प्र. आज दुनिया मीठे पानी के संसाधनों की उपलब्धता और उन तक पहुंच के संकट से क्यों जूझ रही है?

GS Paper I (250 शब्द)

उत्तर:

प्राकृतिक और मानव-प्रेरित कारकों के संयोजन के कारण आज दुनिया मीठे पानी के संसाधनों की उपलब्धता और पहुंच के संकट का सामना कर रही है। इस संकट के पारिस्थितिकी तंत्र, समाज और अर्थव्यवस्थाओं पर दूरगामी परिणाम होंगे।

इस संकट की व्याख्या करने वाले कुछ प्रमुख बिंदु इस प्रकार हैं:

जनसंख्या वृद्धि: वैश्विक जनसंख्या लगातार बढ़ रही है, जिससे पीने, स्वच्छता और कृषि के लिए मीठे पानी की मांग बढ़ रही है। इससे मौजूदा जल स्रोतों पर अत्यधिक दबाव पड़ता है।

जलवायु परिवर्तन: जलवायु परिवर्तन पारंपरिक वर्षा पैटर्न को बाधित करता है, जिससे बार-बार और गंभीर सूखा, बाढ़ और लू चलती है। इससे पानी की कमी की समस्या बढ़ जाती है, जिससे जल संसाधनों का प्रभावी ढंग से पूर्वानुमान लगाना और प्रबंधन करना मुश्किल हो जाता है।

जल प्रदूषण: औद्योगिक, कृषि और शहरी गतिविधियों से होने वाला प्रदूषण मीठे पानी के स्रोतों को प्रदूषित करता है, जिससे वे उपभोग के लिए असुरक्षित हो जाते हैं। प्रदूषित जल के उपचार के लिए महत्वपूर्ण संसाधनों की आवश्यकता होती है।

अति-निष्कर्षण: कृषि और उद्योग के लिए सतही जल की अस्थिर पंपिंग और अत्यधिक दोहन से जलभरों और नदियों में पानी भरने की क्षमता की तुलना में तेजी से कमी आती है।

अकुशल जल उपयोग: व्यर्थ सिंचाई पद्धतियाँ और कृषि तथा घरों में अकुशल जल उपयोग जल की कमी में योगदान करते हैं। जल-कुशल प्रौद्योगिकियों और प्रथाओं को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है।

असमान वितरण: पानी की कमी अक्सर हाशिए पर रहने वाले समुदायों को असंगत रूप से प्रभावित करती है, जिससे सामाजिक और आर्थिक असमानताएँ बढ़ जाती हैं। स्वच्छ जल तक पहुंच एक महत्वपूर्ण मानवाधिकार मुद्दा बन गया है।

संघर्ष: जल संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धा स्थानीय, क्षेत्रीय और यहां तक कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी संघर्ष का कारण बन सकती है। साझा जल निकायों का प्रबंधन एक भू-राजनीतिक चुनौती बन जाता है।

बुनियादी ढांचे की कमी: कई क्षेत्रों में ताजे पानी को प्रभावी ढंग से इकट्ठा करने, भंडारण और वितरित करने के लिए आवश्यक बुनियादी ढांचे की कमी है। जल अवसंरचना में निवेश आवश्यक है।

मीठे पानी की उपलब्धता और पहुंच के संकट से निपटने के लिए स्थानीय, राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर ठोस प्रयासों की आवश्यकता है। सतत जल प्रबंधन, संरक्षण, प्रदूषण नियंत्रण और न्यायसंगत वितरण किसी भी समाधान के महत्वपूर्ण घटक हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि भावी पीढ़ियों की इस आवश्यक संसाधन तक पहुंच हो।